# पाठ 17 चल रे तुमा बाटे–बाट

तुमन अपन घर म ककादाई, ममादाई अउ बबा मन ले कतको किसम के कहानी सुने होहू। ये कहानी मन म मनोरंजन के संगे–संग गियान के गोठ घलो रहिथे। अइसन कहानी ल लोककथा कहिथें। आवव, ये पाठ म अइसने एक ठन छत्तीसगढ़ी लोककथा पढ़न। ये लोककथा म एक डोकरी अउ ओकर बेटी के कहानी हवय। बेटी ह अपन दाई ल बघवा, भलुवा ले बँचाये बर का उपाय करथे, उही ल ये पाठ म पढ़बो।

तइहा के बात आय। एक गाँव म एक झन डोकरी राहय। ओकर राहय एक झन बेटी, तेन ह अपन ससुराल चल दे राहय।

डोकरी के बेटी के गाँव ह अब्बड़ दुरिहा म राहय। डोकरी ल अपन बेटी के खूबेच सुरता आवय। फेर का करय, बेटी के ससुराल के रद्दा म जंगल अउ पहाड़, तिंहाँ बघवा, भलुवा अउ चितवा के माड़ा। डर के मारे रद्दा रेंगना घलो मुस्कुल होवय।

एक दिन डोकरी ह अपन बेटी घर जाय बर सोंचिस। बने–बने रोटी–पीठा बना लिस अउ मोटरी म बाँध के चलते बनिस।

जंगल भीतरी डोकरी बिचारी रेंगत राहय। थोकिन दुरिहा म डोकरी ह बघवा ल देखके, काँपे लगिस। बघवा ह तीर म आथे अउ गुर्रा के कहिथे– ''अवो डोकरी, मोला गजब भूख लागत हे। मैं तोला खाहूँ।''

तब डोकरी कहिथे–''बेटा, देख तो मैं ह जर–बुखार मैं दुबरागे हवँव। अपन बेटी घर जावत हँव। उँहा ले बने मोटा के आहूँ तब तैं मोला खा लेबे।''

बघवा खुश हो के कहिथे–''हव,हव बने काहत हस डोकरी दाई। जा, झटकुन लहुट आबे।'' डोकरी लकर–धकर रेंगिस, तहाँ थकगे। थोकिन सुरतइस, फेर रेंगिस। रेंगते–रेंगत उही रद्दा म डोकरी ल फेर एक ठन भलुवा ह छेंक लिस। भलुवा अपन चूँदी ल हला के

**शिक्षण–संकेतः–** पाठ ल शुरू करे के पहिली कोनो अउ दूसर लोककथा ल सुनावँय। फेर पाठ के आदर्श वाचन करँय। तेकर पाछू अनुकरण वाचन करावँय। लइका मन के उच्चारण ऊपर ध्यान जरूर देवँय।

कहिथे–'' ये ओ डोकरी दाई, मोला अब्बड़ भूख लागे हे। मैं तोला नइ छोड़ँव। तोला खाहूँ।'' तब डोकरी ह कहिथे–''सुन बेटा भलुवा, मैं अपन बेटी घर मोटाय बर जावत हँव। उहाँ ले आहूँ त मोला खा लेबे।'' भलुवा ह डोकरी के बात ल मान के ओला छोड़ दिस। डोकरी बिचारी आगू डाहर रेंगिस। थोकिन दुरिहा म चितवा संग भेंट होगे। चितवा घलो खाहूँ किहिस, त डोकरी ह वोहू ल समझाइस। चितवा घलो मानगे।

रेंगत, बइठत, सुरतावत डोकरी अपन बेटी घर पहुँचगे। डोकरी ल देख के ओकर बेटी अब्बड़ खुश होगे। महतारी–बेटी दूनो झन दुख–सुख गोठियाइन। बने–बने खाइन। डोकरी गजब दिन रहिगे अपन बेटी घर। जब ओकर मन भरगे, त अपन बेटी ल कहिथे–''तोर घर राहत गजब दिन होगे बेटी। अब मैं अपन घर जाहूँ।'' त बेटी कहिथे,''आज भर अउ रहि जा दाई, काली जुवार खा–पी के बने चल देबे।''

डोकरी कहिस–''का होही बेटी, एक दिन अउ रहि जहुँ। फेर मोला जाये बर हिम्मत नइ होवत हे। मैं ह संसो–फिकर म परगे हँव।''

''का संसो–फिकर म परे हस दाई? थोकिन महुँ ल बता ना।'' डोकरी के बेटी ह पूछिस।

''कुछु उपाय बताबे त काम बन जाही बेटी,'' डोकरी कहिस।

''हव दाई, मँय ह तोला बनेच उपाय बताहूँ।'' बेटी ह कहिस।

तब डोकरी ह ऊपरसँस्सी ले के कहिथे–''सुन बेटी, मँय ह जब तोर घर आवत रहेंव त रद्दा म बघवा, भलुवा अउ चितवा मन मोला खाय बर छेंके रहिन। त ओ मन ल मैं ह भुलवारे हँव। बेटी घर ले मोटा के आहूँ, त मोला खा लेहू। वो तीनों झन मोर अगोरा म रद्दा देखत बइठे होहीं। अब मैं का करँव।''

अपन दाई के बात ल सुन के बेटी कहिस–''तैं थोरको संसो–फिकर झन कर दाई।''

थोकिन म डोकरी के बेटी ह एक ठन लम्बा अउ बने चाकर तुमा लाइस । ओला बने खोल दिस। तीन ठन छेदा कर दिस, नाक अउ आँखी बर। उही तुमा म डोकरी घुसरगे। फेर रद्दा म ढुला के डोकरी के बेटी कहिस–''चल रे तुमा बाटे–बाट।''

अब तुमा ह रद्दा म ढुलत–ढुलत जावत राहय।

रद्दा म चितवा ह आगू मिलिस। चितवा ह तुमा ल पूछिस ''कस रे तुमा, डोकरी ल तैं देखे हस का? तुमा भीतरी ले डोकरी कहिस–''डोकरी देखेन न फोकली, चल रे तुमा बाटे–बाट।

तुमा ढुलगत–ढुलगत भालू डहर चल दिस।

भलुवा डोकरी के अगोरा म राहय। तुमा ल देखिस त पूछिस–''ये जी तुमा, तैं डोकरी ल देखे हस का?''डोकरी फेर कहिस– ''डोकरी देखेन न फोकली, चल रे तुमा बाटे–बाट।''

आखिर म बधवा घलो मिलिस। तुमा ल उहू पूछिस, त डोकरी ह फेर ओइसने कहिस–''डोकरी देखे न फोकली, चल रे तुमा बाटे–बाट।''

तुमा संग ढुलगत–ढुलगत डोकरी अपन गाँव पहुँचगे। तहाँ तुमा ल फट ले फोर के। डोकरी राहय तेन मुस्कावत उठगे।

## छत्तीसगढ़ी शब्द के हिन्दी अर्थ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| छेंकना | – | रोकना | चूँदी | – | बाल |
| तुमा | – | गोल लौकी | मोटरी | – | गठरी |
| बाट | – | रद्दा, रास्ता | झटकुन | – | जल्दी |
| तइहा | – | बहुत पुरानी | लहुटना | – | लौटना |
| डोकरी | – | बुढ़िया | लकर–धकर | – | जल्दी–जल्दी |
| सुरता | – | याद | महतारी | – | दाई, माँ |
| रद्दा | – | रस्ता | अगोरना | – | प्रतीक्षा करना |
| माड़ा | – | माँद, गुफा | संसो फिकर | – | चिंता, फिक्र |
| रेंगना | – | चलना | चाकर | – | चौड़ा |
| ऊपर सँस्सी | – | गहरी साँस | | | |

## प्रश्न अउ अभ्यास

- कक्षा ल दू दल म बाँट के एक–दूसर ले प्रश्न–उत्तर करावँय। कुछ प्रश्न मन अइसे हो सकत हे–

**क.** ये पाठ म काकर कहानी हवय ?

**ख.** ये पाठ म कोन–कोन जानवर के नाँव आय हे, तुमन ऊँकर नाँव बताव ?

### प्रश्न 1 खाल्हे लिखाय प्रश्न के उत्तर लिखव–

**अ.** डोकरी के कै झन बेटी राहय ?

**ब.** जंगल म कोन–कोन जानवर के माड़ा राहय ?

**स.** डोकरी ल देख के कोन अब्बड़ खुश होगे ?

**द.** अपन दाई के बात ल सुनके बेटी का कहिथे ?

प्रश्न 2 कहानी ल धियान लगाके पढ़व, अउ लिखव, ये बात ल कोन ह, काकर ले केहे हे–

क. "कुछु उपाय बताबे त काम बन जाही बेटी।"

ख. "चल रे तुमा बाटे–बाट।"

ग. "डोकरी देखेन न फोकली चल रे तुमा बाटे–बाट।"

घ. "अवो डोकरी, मोला गजब भूख लागत हे। मैं तोला खाहूँ।"

प्रश्न 3 कारन बता के उत्तर लिखव।

अ. डोकरी अपन बेटी घर काबर गइस ?

ब. बघवा ह डोकरी ल काबर छेंक लिस ?

## भाषा–तत्व अउ व्याकरण

इहाँ हम सीखबो– स्त्रीलिंग शब्द बनाना अउ पर्यायवाची शब्द लिखना।

प्रश्न 1 'ई' के मात्रा ले अंत होवइया पाँच ठन स्त्रीलिंग शब्द लिखव। जइसे–"डोकरी"।

प्रश्न 2 खाल्हे लिखाय शब्द ले वाक्य बना के लिखव–
मुस्कुल, रोटी–पीठा, उपाय, डोकरी, बाटे–बाट।

प्रश्न 3 खाल्हे लिखाय शब्द के हिन्दी पर्यायवाची शब्द लिखव –
महतारी, रद्दा, जंगल, आँखी, चूँदी, संसो

## रचना

- जंगल–पहार के चित्र बनाके रंग भरव।

## गतिविधि

- ये कहानी ल पढ़के एक ठन नाटक तियार करव अउ ओला कक्षा म प्रस्तुत करव।

## योग्यता विस्तार

- अलग–अलग जानवर के आवाज निकालव।
- "चल रे तुमा बाटे–बाट" जइसन अउ लोककथा खोजव अउ कक्षा म सुनावव।

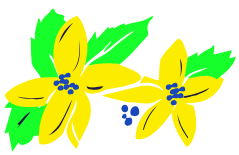

4VN8ZK